समुद्री जैव विविधता का जीवन रक्षा में महत्त्व

वैद्य मोहन लाल जायसवाल[1], वैद्य मृदुल रंजन[2]

[1]सहायक आचार्य, द्रवयगुण विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

[2]स्नातकोत्तर अध्येता, पंचकर्म विभाग, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

ईमेल : priyamldg@gmail.com

परिचय

पृथ्वी का 70 प्रतिशत समुद्र जैविक एवं रासायनिक विविधता का बहुत ही विशाल स्रोत है। आज सामुद्रिक द्रव्यों का प्रयोग औषध, आहारद्रव्य सौन्दर्य, कृषिरसायन के क्षेत्र में प्रचुरता पूर्वक हो रहा है। आयुर्वेद भी इससे अछूता नहीं है। ऋषियों ने आयुर्वेद के प्रयोजन अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा एवं रोगी को रोग से मुक्त कराने के लिये स्थावर, जाङ्गम, औद्भिद 3 प्रकार के द्रव्यों को बताया है।

शरीर के दोषधातुमल अपने समानगुण वाले द्रव्यों से वृद्धि तथा विपरीतगुण वाले द्रव्यों से ह्रास को प्राप्त होते है, यह आयुर्वेद का मौलिक सिद्धान्त है। इस सम्बन्ध में यह भी कहा है कि शरीर के जो दोष, धातु या मल क्षीण हुए हों उनकी चिकित्सा में उसी दोष, धातु या मल का प्रयोग होना चाहिए। यदि किसी कारण ऐसा संभव नहीं हो तब समान गुण वाले स्थावर, जाङ्गम आदि द्रव्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इनमें जाङ्गम द्रव्य वर्ग के अन्तर्गत सामुद्रिक द्रव्यों यथा–मुक्ता, प्रवाल, शंख आदि का प्रचुर प्रयोग किया है। साधारणतः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इन द्रव्यों का प्रयोग किया है। साधारणतः आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इन द्रव्यों का प्रयोग बहुमूल्य अर्थिक द्रव्यों एवं कैल्शियम प्रतिनिधि के रुप में किया जाता है परन्तु हमारा शास्त्र स्वास्थ्य की दृष्टि से इन्हें बहुमूल्य मानता है।

साधारणतया इन द्रव्यों में उपस्थित अशुद्धियों को शोधन एवं मारण प्रक्रिया के द्वारा दूर कर पिष्टी और भस्म निर्मित किया जाता है। इन्हीं पिष्टी और भस्म का चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य से हम सामुद्रिक जाडगंम द्रव्यों को मुख्यतः दो रुप में प्रयोग करते हैं। मुक्ता व प्रवाल का रत्न रूप में अर्थात् आर्थिक दृष्टि कोण से तथा शंख, कपर्द, मुक्ताशुक्ति आदि का कैल्शियम प्रतिनिधि के रुप में उपयोग किया जाता है। परन्तु आयुर्वेद में सामुद्रिक जाडगंम द्रव्यों का रत्न तथा कैल्शियम प्रतिनिधि के रूप के साथ–साथ उनके रस, गुण, वीर्य, विपाक के आधार पर विभिन्न प्रकार के व्याधियों में प्रयोग किया जाता है।

यदि हम इन द्रव्यों के गुणों पर संक्षिप्त दृष्टि डाले तो हमें ज्ञान होगा कि इन द्रव्यों का चिकित्सा में कितना महत्त्व है। जो संक्षिप्त में इस प्रकार है–

1-	मुक्ता	रत्न वर्ग
2-	प्रवाल	
3-	शंख	सुधा वर्ग
4-	मुक्ताशुक्ति	
5-	समुद्रफेन	
6-	कूर्मास्थि	

7- अग्निजार
8- कपर्द } साधारण रस
9- नख

आचार्य सुश्रुत ने जाङ्गंम जगत को 4 वर्गों में विभाजित किया हैः— 1—जरायुज 2— अण्डज 3—स्वेदज 4—उद्भिज्ज। इनमें से मुक्ता, प्रवाल, शंख, मुक्ताशुक्ति, समुद्रफेन, कपर्द, नख स्वेदज वर्ग के अन्तर्गत तथा कूर्मास्थि एवं अग्निजार अण्डज वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

1. मुक्ता

English Name-Pearl
Zoological Name- *Pinctada margaritifera*

मुक्ता

जब मुक्ताशुक्ति में जब कोई विजातीय कण प्रविष्ट हो जाता है तो शुक्ति के अन्दर रहने वाला जीव अपने स्राव से अनेक स्तरों से युक्त मुक्ता का निर्माण करता है।

श्रेष्ठ मुक्ता के गुण

देखते ही मन को आह्लादित करने वाली श्वेत, लघु, स्निग्ध, कान्तिमान, निर्मल, वृहत् आकार वाली, तोयप्रभ (पानीदार) एवं गोल मुक्ता श्रेष्ठ होती है।

रासायनिक संगठन

मुक्ता में 80-82% कैल्शियम कार्बोनेट, 10-14% कॉचियोलिन और 2-4% जल होता है।

गुण

रस—मधुर गुण—लघु, रुक्ष
वीर्य—शीत विपाक—मधुर

औषधीय उपयोग

1. यह रस से वात को, वीर्य एवं विपाक से पित्त को एवं गुण से कफ को नष्ट करती है अर्थात यह त्रिदोषघ्न है।
2. यह हृद्य तथा रक्तस्तम्भक होने से हृदय को शक्ति प्रदान करती है तथा रक्तचाप को कम करती है।
3. दीपनीय होने से अग्निमांद्य को कम करती है।
4. यह शुक्रवर्द्धक है तथा स्त्रियों के श्वेत एवं रक्त प्रदर में उपयोगी है।
5. यह ज्वर एवं दाह को कम करती है।
6. यह अस्थिदुर्बलता में अत्यन्त उपयोगी है तथा दन्त के सरलातापूर्वक निकलने में सहायक होते हैं।
7. यह वयःस्थापक है, साथ ही मेधा, घृति, स्मृति तीनों को बढ़ाती है।
8. मोती की चन्द्र ग्रह से मैत्री है अतः चन्द्र ग्रह के कुदृष्टि के होने पर गलगण्ड, गण्डमाला, हृदयरोग, श्वास—कृच्छता आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं इसके निवारण के लिए सैदव मोती धारण या सेवन करना चाहिए।
9. मौक्तिकानामालेपः विषजन्यशोथदाहतोज्वरापहः (च. चि. 23/191)— मोती का लेप विषजन्य शोथ, दाह, तोद, ज्वर नाशक होता है।

मुक्ता के प्रमुख औषधीय योग

मुक्तापंचामृत मुक्तादि चूर्ण, वसन्तकुसुमाकर रस, प्रवालपंचामृत, कस्तुरीभैरव रस इत्यादि।

प्रवाल

English Name- Red Coral
Zoological Name- *Coralium rubrum*

प्रवाल का निर्माण एक विशेष प्रकार के समुद्री एंथोजोअन पोलिप्लस नामक जन्तु द्वारा होता है। प्रवाल के दो भाग होते हैं, नीचे का ठोस स्थूल भाग प्रवालमूल तथा ऊपर की पतली शाखाएं प्रवालशाखा कहलाती है। औषधीय दृष्टि से प्रवालमूल श्रेष्ठ होता है।

प्रवाल

श्रेष्ठ प्रवाल के गुण

पक्वविम्बीफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम्।
स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम्।। र०चू०

अर्थात् पक्वविम्बीफल के सदृश रक्तवर्ण, गोलाकार, सरल, स्निग्ध, अक्षत तथा स्थूल प्रवाल उत्तम होता है।

रासायनिक संगठन

कैल्शियम कार्बोनेट 87% मैग्निशियम कार्बोनेट 3%, लौह 4.5%, सेन्द्रिय द्रव्य 8%

गुण

मधुरोऽम्लशीतः सरो वीर्यकरः कान्तिकरस्त्रिदोषघ्नो विषदृष्टिदोषनाशकः।

रस– मधुर, अम्ल	गुण–लघु, रुक्ष
वीर्य–शीत	विपाक–मधुर

औषधीय उपयोग

1. यह त्रिदोषनाशक विशेषतः कफपित्तनाशक है।
2. प्रवाल धी, धृति, स्मृति वर्द्धक है तथा उन्माद, अपस्मार की चिकित्सा में उपयोगी है।
3. यह अम्लपित्त तथा रक्तार्श में लाभदायक है।
4. हृदय को शक्ति प्रदान करता है।
5. गव्यमूत्रेण सह आसेवितोऽयं पाण्डुरोगघ्नः (सु.उ. 44/21)–पाण्डुरोग में गोमूत्र के साथ सेवन अत्यन्त लाभदायक है।
6. यह शुक्रवर्द्धक एवं नपुंशकता नाशक है।
7. सुजाक एवं उपदंश रोग में उत्पन्न दाह का शमन करती है।
8. कफमूत्रकृच्छघ्नः च०चि०(26/56)– यह कफज मूत्रकृच्छ नाशक है।
9. नेत्र की दाह पीड़ा शोथ नाशक है।
10. श्वास, कास, उरः क्षत विशेषतः बालकों के कुक्करकास में उपयोगी है।
11. दाँत एवं अस्थि को मजबूती प्रदान करती है।
12. विसर्प प्रदेहार्थमुपयुज्यते (च०चि० 21/82)– विसर्प रोग में इसका लगाते हैं।
13. प्रवाल धारण करने से भूत, पिशाच का डर नहीं रहता है।
14. प्रवाल की मैत्री मंगल ग्रह से है। अतः मंगल ग्रह की कुदृष्टि के कारण उत्पन्न रोग यथा–रक्तपित्त, रक्तदोष, भगन्दर आदि में प्रवाल धारण एवं सेवन अत्यन्त लाभदायक है।

प्रवाल के प्रमुख औषधीय योग

प्रवालपंचामृत, हेमनाथ रस, कामदुधारस, ब्रह्मरसायन, इन्द्रोक्तरसायन।

3. शंख

English Name-Conch Shell
Zoological Name- *Terbinella rapa* or *Xanchus pyrum*

शंख समुद्र में उत्पन्न होने वाले मोलस्क वर्गीय प्राणी का वाह्य कवच है।

शंख

शंखनाभी

रासायनिक संगठन

यह कैल्शियम कार्बोनेट से बना होता है।

गुण

स्वादुः कटुविपाकी उष्णः चक्षुष्यः पुष्टिवीर्यबलप्रदः पित्तघ्नः परिणामशूलरक्तपित्तगुल्मशूलश्वासविषनाशकः।
(ध०नि० 3/179)

रस–कषाय, कटु, क्षारीय	गुण–लघु, शीत
वीर्य–शीत	विपाक–कटु

औषधीय उपयोग

1. कर्म की दृष्टि से यह ग्राही, बल्य लेखनीय एवं अग्निदीपक है।
2. शंख भस्म ग्राही है अतएव अतिसार में विशेषतः पक्वातिसार, ग्रहणी रोग में मल की अतिप्रवृत्ति को रोकता है तथा क्षारीय होने से आमपाचन कर तद्गत शूल का शमन करता है।
3. यकृत एवं प्लीहावृद्धि को नष्ट करता है।
4. नेत्रपुष्पहर और युवानपिडिका नाशक है।
5. पाण्डुरोगनाशकः(सु.उ.44/21)—यह पाण्डुरोग को नष्ट करता है।

शंख के प्रमुख औषधीय योग

अग्निकुमार रस, कफकेतु रस, ग्रहणीकपाट रस, अग्निसंदीपन रस।

4. मुक्ताशुक्ति

English name-Pearl Oyster/Pearl Mother
Zoological name- *Pinctada margaritifera*

यह मोलस्क जातीय प्राणी का आवरण है जिसके अन्दर मुक्ता का निर्माण होता है।

मुक्ताशुक्ति

रासायनिक संगठन

इसमें मुख्यतः कैल्शियम कार्बोनेट होता है।

गुण

रस—कटु	गुण—स्निग्ध
वीर्य—शीत	विपाक—मधुर

औषधीय उपयोग

1. इसके गुणधर्म मुक्ता के समान परन्तु उससे न्यून होते हैं।
2. यह क्षय, श्वास, कास, नेत्रदाह, हृदयरोग में लाभदायक है।
3. यह पित्तज दाह, पित्तज अरुचि, पित्तातिसार, पित्तज परिणामशूल, अम्लपित्त में विशेष लाभदायक है।
4. आमाशय, यकृत, प्लीहा, ग्रहणी आदि अंगों पर विशेषतः कार्यकारी है।
5. सभी प्रकार के उदर रोग नाशक है।

मुक्ताशुक्ति के प्रमुख औषधीय योग

प्रवालपंचामृत, बडवानल रस, विषमज्वरान्तक लौह, लूताविषनाशक अगद, ग्रहणीशार्दुल रस।

5. समुद्रफेन

English name- Cuttle Fish Bone
Zoological name- *Sepia officinalis*

समुद्रफेन

समुद्रफेन समुद्र में पाये जाने वाले मत्स्य जातीय प्राणी का पृष्ठ भाग है जो प्राणी की मृत्यु के बाद अथवा ऐसे ही शरीर से छुट कर समुद्र की लहरों पर तैरते हुए तटीय भाग तक आ जाते हैं।

रासायनिक संगठन

कैल्शियम कार्बोनेट 80-85%, फास्फेट, सल्फेट, सिलिका।

गुण

रस—कषाय	गुण—लघु, रुक्ष
विपाक—कटु	वीर्य—शीत

औषधीय उपयोग

1. यह कफपित्तज रोगों में प्रयुक्त होता है।
2. तिमिर, नेत्रकण्डू आदि नेत्ररोगों में इसके चूर्णाजन का उपयोग करते हैं।

3-. कर्णस्राव में इसके चूर्ण को कर्ण में डालते हैं।

4. लेखनीय, दीपनीय तथा पाचनीय है।

5. यह रक्तपित्त में प्रयुक्त होता है।

समुद्रफेन के प्रमुख औषधीय योग

सुखावर्ती, ज्वरधूमकेतु रस।

6. कपर्द

English name-Cowries
Zoological name- *Cypraea moneta*

कपर्द मोलस्क जाति का समुद्री प्राणी का कवच है।

कपर्द

श्रेष्ठ कपर्द के लक्षण

लम्बे वृन्त वाली, पीत, पृष्ठ पर छोटी छोटी गांठों से युक्त, 12 से 15 ग्राम वाली कपर्द श्रेष्ठ होती है।

रासायनिक संगठन

इसमें कैल्शियम, फास्फेट, कार्बोनेट, लोराइड, मैगनीज एवं सोडियम फ्लोराइड होता है।

गुण

रस–कटु गुण–रुक्ष, तीक्ष्ण
वीर्य–उष्ण विपाक–कटु

औषधीय उपयोग

1. स्फोट, कण्ठमाला, अपची में भस्म का वाह्य प्रयोग शोथहर है।
2. शुष्क कास में देने से अत्यन्त लाभ मिलता है।
3. कर्णस्राव में लाभप्रद है।
4. तारुण्यपिडिकाओं तथा उससे उत्पन्न काले दाग में लाभप्रद है।
5. तीक्ष्ण होने से इसका उपयोग जल के साथ न करके स्निग्ध द्रव्यों के साथ करना चाहिए।

कपर्द के प्रमुख औषधीय योग

अग्निकुमार रस, ग्रहणीकपाट रस, प्रदरान्तक लौह, लवंगादि वटी, राजमृगाङ्क रस।

7. अग्निजार

English name- Abbergris
Zooloical name- *Ambra grisea*

स्पर्म व्हेल जाति की वृहद् मत्स्य के आँत्र में स्रवित होने वाला मोम सदृश पदार्थ है। यह अत्यन्त सुगन्धित द्रव्य है। कुछ लोगों के मत से यह स्पर्म व्हेल का शुष्क मल है।

गुण

रस–कटु गुण–लघु
वीर्य–उष्ण विपाक–कटु

अग्निजार

औषधीय उपयोग

1. यह वातकफ शामक तथा पित्तवर्द्धक है।
2. उष्ण वीर्य होने से इसका लेप शोथ पर उपयोगी है।
3. नाड़ीबल्य होने से पक्षाघात, उन्माद, अपस्मार एवं धनुर्वात में उपयोगी है।
4. दीपनीय, उदरशूल तथा मेदोरोग नाशक है।

अग्निजार के प्रमुख औषधीय योग

वृहत्वातचिन्तामणि रस, जवाहरमोहरा वटी, धात्री रसायन।

8. नख

Zoological name- *Achatina fulica* Fer.

नख *Achatina fulica* नामक जीव का वाह्य कवच है जो गहरे भूरे रंग का तथा अनेक पर्तों का बना होता है। यह दुर्गन्धित होता है किन्तु तैल के साथ पकाने पर सुगन्धित हो जाता है।

नख

गुण

रस–कटु, कषाय
विपाक–कटु
गुण–लघु, रुक्ष
वीर्य–उष्ण

औषधीय उपयोग

1. यह कफवातज विकारों में प्रयुक्त होता है।
2. वर्णविकार, व्रण, कुष्ठ, कण्डू, शोथ, वातरक्त और धूपन करते हैं।
3. अपस्मार, अपतंत्रक, मूर्च्छा में प्रयुक्त करते हैं।
4. ज्वार, अर्श, यकृद्विकार में उपयोगी है।

नख के प्रमुख औषधीय योग

शैलेयकादि तैल, महासुगन्धहस्ती अगद।

सामुद्रिक द्रव्य कैल्शियम कार्बोनेट प्रधान होते हुए भी इनमें सूक्ष्मतत्वांश की भिन्नता के कारण गुणकर्मों में विविधता होने से ये अनेक रोगों में प्रयुक्त होते हैं।

जिस प्रकार आयुर्वेदीय महर्षियों ने प्राणियों के स्वास्थ्य संरक्षण, संवर्द्धन एवं विविध व्याधियों के प्रशमनार्थ बहुलतापूर्वक औषधीय वनस्पतियों (Medicinal Plants) का प्रयोग किया है, उसीप्रकार चेतवान् मानव के चेतनप्रधान सामुद्रिक जैवीय द्रव्यों के विभिन्न अंग– प्रतयंगों को विशिष्ट संस्कार पद्धति से (by specific processing method) औषध स्वरूप में व्यवहृत किया है। जो आयुर्वेदीय महर्षियों के 'यत् पिण्डे तद् ब्रहमाण्डे' तथा 'यत्राकृतिस्तद्–गुणावशन्ति' प्रसंग के सिद्धान्त एवं विस्तृत मनन, पर्यावलोचन और ज्ञानानुभाव का क्रियात्मक दिग्दर्शन है तथा 'नानौषधि भूतं जगत् किचिंत् द्रव्यमुपलभ्यते' सूत्र का सुपरिणमन है।

सन्दर्भ सूची

1. श्री चक्रपाणी दत्त, आयुर्वेद दीपिका टीका चरक संहिता, मुन्शीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्रा०लि०, 1981।
2. श्री डल्हणाचार्य, निबन्ध संग्रह टीका सुश्रुत संहिता चौखम्भा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, 2008।
3. चुनेकर, भावप्रकाश, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2002।
4. सदानन्द शर्मा, रस तरंगिणी, मोतीलाल बनारसीदास, 1979।
5. डॉ० गुरुप्रसाद शर्मा, धन्तरिनिघन्टु, चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली, 1992।
6. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्यगुण–विज्ञान, चौखम्भा भारती अकादमी, 1979।
7. वैद्यराज हकीम दलजीत सिंह, यूनानी द्रव्यगुणादर्श, आयुर्वेदिक एवं तिब्बी अकादमी, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1977।